पाठ 1

वीणा वादिनी वर दे

(प्रस्तुत कविता में कवि ने वीणापाणी सरस्वती की वंदना करते हुए अज्ञानता को दूर करने तथा नवचेतना का प्रकाश फैलाने की कामना की है |)

वर दे वीणावादिनी वर दे |
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे !
काट अंध-उर के बंधन-स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद तम-हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !
नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद - मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव-पर, नव-स्वर दे !

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शब्दार्थ

रव = ध्वनि | अमृत मन्त्र = ऐसे मन्त्र जो अमरत्व की ओर ले जायें, कल्याणकारी मन्त्र | अंध-उर = अज्ञानपूर्ण ह्रदय | कलुष = मलिनता, पाप | मन्द्ररव = गंभीर ध्वनि | विहग-वृन्द = पक्षियों का समूह |

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. पाठ में दिये गये चित्र के आधार पर एक तालाब का चित्र बनाइए तथा उसे निम्नलिखित से सजाइए-

एक हंस, दो बतख, कमल के दो फूल, तीन कलियाँ, सात पत्तियाँ।

2. इस कविता को कंठस्थ करके भाव और लय के साथ कक्षा में सुनाइए।

3- यह कविता अनेक संगीतकारों द्वारा संगीतबद्ध की गयी है। अपने बड़ों/माता पिता अथवा शिक्षक के मोबाइल फोन पर इस कविता के संगीतबद्ध रूप को सुनें तथा उसके अनुसार गाने का अभ्यास करें। विद्यालय के किसी कार्यक्रम में कविता को गाकर प्रस्तुत करें।

विचार और कल्पना

इस कविता में कवि द्वारा माँ सरस्वती से भारत और संसार के लिए अनेक वरदान माँगे गये हैं। आप अपने विद्यालय के लिए क्या-क्या वरदान माँगना चाहेंगे ?

कविता से

1. कविता में भारत के लिए क्या वरदान माँगा गया है ?

2. तालिका के खण्ड 'क' और खण्ड 'ख' से शब्द चुनकर शब्द-युग्म बनाइए-

'क'	**'ख'**
वीणा -	वादिनि
स्वतन्त्र -	स्तर
अन्ध -	रव
विहग -	मन्त्र नव
ताल -	उर
बन्धन -	छन्द नव
अमृत -	मन्द्र रव
जलद -	वृन्द

3. पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर, बहा जननी, ज्योतिर्मय निर्झर।
(ख) कलुष-भेद तम-हर, प्रकाश भर, जगमग जग कर दे।
(ग) नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव, नवल कंठ, नव जलद - मन्द्ररव।

भाषा की बात

1. कविता में आये 'वर दे', 'भर दे' की तरह अन्य तुकान्त शब्दों को छाँटकर लिखिए।
2. ज्योतिः+मय=ज्योतिर्मय, निः+झर=निर्झर। इन शब्दों में विसर्ग का रेफ हुआ है। यह विसर्ग सन्धि है। इसी प्रकार के दो शब्द लिखिए तथा उनका सन्धि विच्छेद कीजिए।
3. विभक्ति को हटाकर शब्दों के मेल से बनने वाला शब्द समास कहलाता है। 'वीणा-वादिनि' का अर्थ है 'वीणा को बजाने वाली' अर्थात् सरस्वती। यह बहुव्रीहि समास का उदाहरण है। इसी प्रकार गजानन पीताम्बर, चतुरानन शब्दों में भी बहुव्रीहि समास है। इनका विग्रह कीजिए।
4. 'नव गति' में 'नव' गुणवाचक विशेषण है, यह गति, शब्द की विशेषता बताता है। कविता में 'नव' अन्य किन शब्दों के विशेषण के रूप में आया है, लिखिए।

इसे भी जानें

‘सरस्वती सम्मान’ के0 के0 बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किसी भी भाषा में गत दस वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति पर दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1991 ई0 में हुई।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने मतवाला, सुधा और समन्वय आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

शिक्षण संकेत-

कविता के संगीतबद्ध रूप को सुने तथा उसके अनुसार छात्रों को गाने का अभ्यास कराएँ।